بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

Office of The sadar Majlis Ansarullah Bharat
دفتر صدر مجلس انصار اللہ بھارت

Ph. +91-01872-220186, Fax, +91-01872-224186, Mob, +91-9815494687, E-Mail: ansarullahbharat@gmail.com

सारांश ख़ुत्बः ईदुल-अज़हियः सैय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीहिल ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दिनांक 28.10.16 स्थान कैनेडा।

यदि प्रत्येक वाक़िफ़-ए-नौ लड़का तथा लड़की अपनी इस प्रतिज्ञा को आज्ञा पालन के साथ पूरा करने वाला हो तो हम दुनया में एक क्रांति पैदा कर सकते हैं। माँ बाप को भी मैं यह कहना चाहता हूँ कि वे जितनी चाहे अपने बच्चों की ज़बानी तर्बियत कर लें उसका प्रभाव उस समय तक नहीं होगा जबतक अपनी कथनी करनी को इसके अनुसार नहीं करेंगे।

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के पश्चात हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया-

अल्लाह तआला की कृपा से जमाअत के लिए बच्चों को समर्पित करने का रोहजान बढ़ रहा है, प्रतिदिन मुझे वालिदैन के पत्र मिलते हैं। कई बार इनकी संख्या बीस पच्चीस हो जाती है जिसमें माँ बाप अपने होने वाले बच्चों को वक़्फ़-ए-नौ में शामिल करने का प्रार्थना पत्र भेजते हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे रह. ने जब यह आह्वान किया था, पहले निरन्तर नहीं था, फिर आपने यथावत् कर दिया तथा जमाअत ने भी, विशेष रूप से माँओं ने इस पर प्रत्येक देश में लब्बैक कहा। आज से बारह तेरह वर्ष पूर्व जो संख्या वक़्फ़-ए-नौ की 28000 से ऊपर थी अब यह संख्या अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से 61000 के निकट हो चुकी है जिसमें से 36000 से ऊपर लड़के तथा शेष लड़कियाँ हैं। इस प्रकार समय के साथ साथ यह रोहजान बढ़ रहा है कि हमने अपने बच्चों को जन्म से पूर्व वक़्फ़ करना है। परन्तु केवल बच्चों को वक़्फ़ के लिए पेश करने से माँ बाप का दायित्व पूरा नहीं हो जाता बल्कि पहले से अधिक हो जाता है। निःसन्देह एक अहमदी बच्चे के प्रशिक्षण का भार माता पिता पर है और माता पिता अपने बच्चे की सांसारिक शिक्षा भी चाहते हैं, प्रशिक्षण भी चाहते हैं, दीन की शिक्षा भी चाहते हैं परन्तु यह भी याद रखना चाहिए कि प्रत्येक बच्चा और विशेष रूप से समर्पित बच्चा इनके पास जमाअत की अमानत है जिसकी तर्बियत तथा उसे समाज का सुन्दर अंग बनाना माता पिता का कर्त्तव्य है परन्तु वक़्फ़-ए-नौ बच्चों का प्रशिक्षण तथा उनकी दीनी व दुनयावी शिक्षा पर विशेष ध्यान और उन्हें अच्छे ढंग से तय्यार करके जमाअत को देना, इस दृष्टि से भी दायित्व बन जाता है कि जन्म से पूर्व माँ बाप यह एहद करते हैं कि हम, जो कुछ भी हमारे यहाँ पैदा होने वाला है, लड़का है अथवा लड़की, उसे ख़ुदा के लिए, अल्लाह तआला के दीन के लिए, आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सच्चे ग़ुलाम के मिशन को पूरा करने के लिए जो पूर्णतः हिदायत के प्रसार का मिशन है, जो इस्लाम की शिक्षा को विश्व में फैलाने का मिशन है, जो ख़ुदा तआला का हक़ अदा करने की ओर दुनया को ध्यान दिलाने वाला मिशन है, उसके लिए पेश करते हैं। अतः यह कोई हल्का दायित्व नहीं है जो वक़्फ़-ए-नौ बच्चों के वालिदैन, विशेषतः माँ अपने होने वाले बच्चे के जन्म से पहले ख़ुदा तआला के साथ एक प्रतिज्ञा करते हुए पेश करती है तथा ख़लीफ़-ए-वक़्त को लिखते हैं कि हम हज़रत मरयम की माँ की भांति अल्लाह तआला से यह एहद करते हुए अपने बच्चे को वक़्फ़-ए-नौ स्कीम में पेश कर रहे हैं कि-

رَبِّ اِنِّیۡ نَذَرۡتُ لَکَ مَا فِیۡ بَطۡنِیۡ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلۡ مِنِّیۡ ۚ اِنَّکَ اَنۡتَ السَّمِیۡعُ الۡعَلِیۡمُ कि हे हमारे रब्ब! जो कुछ मेरे पेट में है, मैं तेरे लिए पेश कर रही हूँ। यह तो मुझे नहीं पता कि वह क्या है, लड़का है या लड़की परन्तु जो भी है, मेरी इच्छा है, मेरी दुआ है

कि यह दीन का सेवक बने। فَتَقَبَّلْ مِنِّیْ मेरी इस इच्छा और दुआ को क़बूल फ़रमा और इसे स्वीकार कर ले। اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ तू बहुत सुनने वाला और जानने वाला है। यह अभिलाषा होती है एक अहमदी माँ की, जब वह अपने बच्चे को वक़्फ़-ए-नौ के लिए पेश करती है तथा इसमें बाप भी शामिल है।

अल्लाह तआला ने यह दुआ क़ुरआन-ए-करीम में इस लिए सुरक्षित नहीं फ़रमाई कि एक कहानी सुनाना उद्देश्य था, पुराने ज़माने का, अपितु अल्लाह तआला को यह दुआ इतनी पसन्द आई तथा उसे इस लिए सुरक्षित फ़रमाया कि भविष्य में आने वाली मांएँ भी यह दुआ करके अपने बच्चों का दीन के लिए अमूल्य बलिदान करने वाला बनाएँ। यद्यपि प्रत्येक मोमिन दीन को दुनया पर प्राथमिकता देने का एहद करता है परन्तु वक़्फ़-ए-नौ करने वाले, इन स्तरों की उच्चतम सीमाओं को छूने वाले होने चाहिएँ। अतः जब आरम्भ से ही माँ और बाप अपने बच्चों के मस्तिष्क में डालेंगे कि तुम समर्पित हो और हमने तुम्हें केवल दीन के लिए समर्पित किया था और यही तुम्हारे जीवन का लक्ष्य होना चाहिए और साथ ही दुआएँ भी कर रहे होंगे तो फिर बच्चे इस सोच के साथ बड़े होंगे कि उन्होंने दीन की सेवा करनी है। इस सोच के साथ बड़े नहीं होंगे कि हमने कारोबारी बनना है, हमने खिलाड़ी बनना है, हमने अमुक विभाग में जाना है अपितु उनकी ओर से यह सवाल किया जाएगा कि मैं वक़्फ़-ए-नौ हूँ मुझे जमाअत बताए, मुझे ख़लीफ़-ए-वक़्त बताए कि मैं किस क्षेत्र में जाऊँ, मुझे अब इस संसार से कोई मतलब नहीं, अब बिना किसी सांसारिक स्वार्थ एंव अभिलाषा के, केवल और केवल दीन के लिए अपने आपको वक़्फ़ करता हूँ।

मैं पहले भी विस्तार पूर्वक बयान कर चुका हूँ। किसी वक़्फ़-ए-नौ बच्चे की यह सोच नहीं होनी चाहिए कि हमने यदि वक़्फ़ किया तो हम भौतिक रूप से किस प्रकार जीवन व्यतीत करेंगे अथवा यह भ्रम मन में उत्पन्न हो जाए कि हम माँ बाप की आर्थिक अथवा शारीरिक सेवा किस प्रकार करेंगे। पिछले दिनों मेरी यहाँ वक़्फ़ीन-ए-नौ के साथ क्लास थी तो एक लड़के ने यह प्रश्न किया कि यदि हम वक़्फ़ करके जमाअत को अपनी पूरी सेवाएँ पेश कर दें तो हम अपने माता पिता का आर्थिक सहयोग अथवा शारीरिक सेवा अथवा सामान्य सेवा किस प्रकार कर सकेंगे। यह प्रश्न उत्पन्न होना इस बात को प्रकट करता है कि माँ बाप ने बचपन से अपने वक़्फ़-ए-नौ बच्चों के दिल में यह बात बिठाई ही नहीं कि तुम्हें हमने वक़्फ़ कर दिया है और तुम केवल और केवल जमाअत की अमानत हो, दूसरे बहिन भाई हमारी सेवा कर लेंगे। तुमने केवल अपने आपको ख़लीफ़-ए-वक़्त की सेवा में पेश कर देना है तथा उसके आदेशानुसार चलना है। हज़रत मरयम की वालिदा की दुआ में जो शब्द **मुहर्रारन** प्रयोग हुआ है उसका यही अर्थ है कि मैंने इस बच्चे को सांसारिक दायित्वों से पूर्णतः मुक्त किया और मेरी दुआ है कि केवल दीन के कामों का दायित्व ही इसकी प्राथ्मिकता हो जाए। अतः उन माँओं और बापों से सर्वप्रथम तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि वक़्फ़-ए-नौ का केवल नाम होना ही काफ़ी नहीं है अपितु वक़्फ़-ए-नौ एक भारी दायित्व है। कुछ लड़के लड़कियाँ जिन्होंने सांसारिक शिक्षा प्राप्त की है, प्रत्यक्षतः बड़ा जोश दिखाते हैं, अपनी सेवाएँ पेश कर देते हैं परन्तु बाद में इस लिए छोड़ जाते हैं कि जमाअत जो एलाऊंस देती है उसमें इनका गुज़ारा नहीं होता। जब एक उच्च उद्देश्य प्राप्त करना है तो तंगी और क़ुरबानी तो करनी पड़ती है। यह सोचने के बजाए कि मेरा अमुक क्लास फ़ैलो मेरी जितनी शिक्षा प्राप्त करके लाखों कमा रहा है और मैं एक महीने में भी उसके एक दिन की आय जितनी नहीं कमा रहा। यह सोच होनी चाहिए कि जो स्तर मुझे ख़ुदा तआला ने दिया है, वह दुनया के माल से बहुत बढ़कर है। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के इस कथन को सम्मुख रक्खें कि सांसारिक समृद्धि की दृष्टि से अपने से नीचे वाले को देखो तथा रूहानियत की दृष्टि से अपने से बढ़े हुए को देखो ताकि भौतिक दौड़ में बढ़ने के बजाए आध्यात्मिकता में बढ़ने का प्रयास करो।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः वाक़्फ़ीन-ए-नौ को साधारण अहमदी से बुलन्द होकर यह स्तर प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। वाक़्फ़ीन-ए-नौ को तो अपने संतोष के स्तरों को अत्यधिक बढ़ाना चाहिए, अपने बलिदान के स्तरों को बहुत बढ़ाना चाहिए। यह नहीं सोचना चाहिए कि यदि हम आर्थिक रूप से कमज़ोर होंगे तो हमें सम्भवतः हमारे बहिन भाई हीन समझें अथवा माता पिता हमारी ओर उस प्रकार ध्यान न दें जिस प्रकार अन्य सदस्यों को दे रहे हैं। वाक़्फ़ीन-ए-नौ को जहाँ बलिदान का स्तर बढ़ाना है वहाँ अपनी इबादतों के स्तर को भी बुलन्द करना चाहिए, अपने आज्ञा पालन के स्तर को भी बढ़ाना

चाहिए। अपने तथा अपने वालिदैन के एहद को पूरा करने के लिए अपनी समस्त क्षमताओं एंव योग्यताओं से काम लेने का प्रयास करना चाहिए। दीन की सिर बुलन्दी के लिए काम करने का प्रयास करना चाहिए तब अल्लाह तआला भी प्रदान करता है तथा बिना प्रतिफल दिए अल्लाह तआला नहीं छोड़ता। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक अवसर पर अपनी प्रतिज्ञाओं का अनुपालन करने के बारे में नसीहत करते हुए फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने क़ुरआन शरीफ़ में इसी लिए हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की प्रशंसा की है। जैसा कि फ़रमाया-

وَإِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰى कि उसने जो एहद किया उसे पूरा करके दिखाया। अतः एहदों को पूरा करना कोई छोटी बात नहीं है तथा वह एहद जो जीवन का एहद है जिसके विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दर्द भरे शब्द हम सुन चुके हैं कि यह कैसा महान एहद है। यदि प्रत्येक वाक़िफ़-ए-नौ लड़का तथा लड़की अपनी इस प्रतिज्ञा को आज्ञा पालन के साथ पूरा करने वाला हो तो हम दुनया में एक क्रांति पैदा कर सकते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ख़ुदा तआला के साथ वफ़ादारी, सच्चाई तथा निष्ठा दिखाना एक मौत को चाहता है। जब तक इंसान दुनया तथा इसके समस्त आनन्दों तथा प्रतिष्ठाओं पर पानी फेर देने के लिए तय्यार न हो जावे और प्रत्येक अनादर और अन्याय एंव तंगी ख़ुदा के लिए सहन करने को तय्यार न हो, यह गुण पैदा नहीं हो सकता। बुत परस्ती यह नहीं कि इंसान किसी वृक्ष या पत्थर की पूजा करे बल्कि हर एक चीज़ जो अल्लाह तआला की निकटता से रोकती है तथा उस पर प्राथमिकता चाहती है, वह बुत है और इतने अधिक बुत इंसान अपने भीतर रखता है कि उसको पता नहीं लगता कि मैं बुत परस्ती कर रहा हूँ।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- इब्राहीम अलैहिस्सलाम को जो यह उपाधि मिली, यह यूँ ही नहीं मिल गई थी। नहीं وَإِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰى की आवाज़ उस समय आई जब वे बेटे को बलिदान करने के लिए तय्यार हो गए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- अतः यह वह स्तर है अल्लाह तआला का प्यार ग्रहण करने के लिए तथा उसकी कृपाओं की प्राप्ति के लिए जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमारे सामने पेश फ़रमाया है और हम से इसकी प्राप्ति की आशा की है। यह स्तर न केवल प्रत्येक वाक़्फ़-ए-नौ को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए बल्कि प्रत्येक वक़्फ़-ए-ज़िन्दगी को याद रखना चाहिए कि जब तक क़ुर्बानियों के स्तर नहीं बढ़ेंगे हमारे वक़्फ़-ए-ज़िन्दगी के दावे, केवल ऊपरी दावे होंगे। कुछ माएँ कह देती हैं, हम कैनेडा आ गए हैं। हमारा बेटा पाकिस्तान में मुरब्बी है अथवा वाक़िफ़-ए-ज़िन्दगी है उसे भी यहाँ बुला लें और यहीं उसकी ड्यूटी लगा दें या हमारे पास आ जाए। जब वक़्फ़ कर दिया तो फिर मुतालबे कैसे, फिर ये अभिलाषाएँ कैसी? अभिलाषाएँ तो समाप्त हो गईं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया कि बिना दुःख के, बिना कठिनाई के क़ुर्बानी नहीं हो सकती। हालात यदि बदले हैं तो उसको सहन करना है, अल्लाह तआला नहीं छोड़ता तथा अत्यधिक प्रदान करता है। अल्लाह तआला करे कि सभी वाक़्फ़ीन-ए-नौ भी तथा उनके माता पिता भी वक़्फ़ की वास्तविकता को समझते हुए अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करने वाले हों तथा अपनी वफ़ा के स्तरों को अधिक से अधिक ऊँचा करते चले जाने वाले हों।

कुछ लोग अपने वाक़्फ़ीन-ए-नौ बच्चों के मस्तिष्क में यह बात डाल देते हैं कि तुम बड़ स्पेशल बच्चे हो तथा जिसका परिणाम यह है कि बड़े होकर भी उनके मस्तिष्क में स्पेशल होना रह जाता है और यह सवाल यहाँ भी इस प्रकार की बातें मुझे पहुंची हैं। वे वक़्फ़ की महत्ता को पीछे कर देते हैं और वक़्फ़-ए-नौ के टाईटल को अपने जीवन का उद्देश्य समझ लेते हैं कि हम स्पेशल हो गए। कुछ बच्चों के दिल में यह विचार उत्पन्न हो गया है कि क्यूँकि हम वक़्फ़-ए-नौ में हैं इस लिए हमें नासिरात, यदि लड़कियाँ हैं तो नासिरात तथा लजना, और लड़के हैं तो अतफ़ाल और ख़ुद्दाम के प्रोग्रामों में शामिल होने की आवश्यकता नहीं है। हमारा संगठन एक अलग संगठन बन गया है। यह बड़ा ग़लत विचार है, यदि किसी के दिल में है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- स्पेशल होने के लिए उनको प्रमाण देना होगा, क्या प्रमाणित करना होगा? यह कि वे ख़ुदा तआला से सम्बंध में दूसरों से बढ़े हुए हैं, तब वे स्पेशल कहलाएँगे। उनमें ख़ुदा का भय अन्य लोगों की अपेक्षा अधिक है तब वे स्पेशल कहलाएँगे, उनकी इबादतों के स्तर दूसरों से अत्यधिक बुलन्द हैं तब वे स्पेशल कहलाएँगे। वे फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ नफ़लें भी अदा करने वाले हैं तब वे स्पेशल कहलाएँगे। उनकी सामान्य नैतिकता का स्तर अत्यंत उच्च कोटि का है, यह निशानी

है स्पेशल होने की। उनकी बोल चाल, बात चीत में दूसरों की तुलना में बड़ा अन्तर है। स्पष्ट होता है कि अत्यंत प्रशिक्षित तथा दीन को दुनया पर हर अवस्था में प्राथमिकता देने वाला व्यक्ति है, तब स्पेशल होंगे। लड़कियाँ हैं तो उनके वस्त्र एंव पर्दा उपयुक्त इस्लामी शिक्षा का नमूना है जिसे दूसरे लोग देखकर भी रश्क करने वाले हों तथा यह कहने वाले हों कि वास्तव में इस माहौल में रहते हुए भी इनके वस्त्र तथा पर्दे एक विशेष नमूना हैं, तब स्पेशल होंगे। लड़के हैं तो उनकी नज़रें लाज के कारण नीचे झुकी हुई हों, न कि इधर उधर व्यर्थ के कामों की ओर देखने वाली, तब स्पेशल होंगे। इन्टरनैट तथा दूसरी चीज़ों पर व्यर्थ की बातें देखने के बजाए वह समय दीन का ज्ञान प्राप्त करने के उपयोग में लाने वाले हों, तो तब स्पेशल होंगे। लड़कों की वेशभूषा दूसरों की तुलना में विशेष हो, तो तब स्पेशल होंगे। रोज़ाना क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने वाले तथा उसके आदेशों को तलाश करके उनके अनुसार कर्म करने वाले हों तो फिर स्पेशल कहला सकते हैं। ज़ैली तंज़ीमों और जमाअती प्रोग्रामों में दूसरों से बढ़कर और यथावत भाग लेने वाले हैं तो स्पेशल हैं। वालिदैन के साथ सुन्दर व्यवहार तथा उनकी दुआओं में अपने दूसरे बहिन भाईयों से बढ़े हुए हैं तो यह एक विशेषता है। रिश्तों के समय लड़के भी तथा लड़कियाँ भी दुनया देखने के बजाए दीन को देखने वाले हैं, अपने रिश्ते निभाने वाले हैं तो स्पेशल कहलाएँगे। उनमें सहन शीलता दूसरों से अधिक है, लड़ाई झगड़े और उपद्रव की परिस्थितियों में उससे बचने वाले हैं, अपितु सन्धि कराने वाले हैं, तो स्पेशल हैं। तबलीग़ के क्षेत्र में सबसे आगे आकर इस कर्त्तव्य को पूरा करने वाले हैं, तब स्पेशल हैं। ख़िलाफ़त का आज्ञा पालन तथा उसके फ़ैसलों के अनुसार कार्य करने में प्रथम श्रेणी के हैं तो स्पेशल हैं। दूसरों से अधिक शक्ति शाली तथा बलिदान करने वाले हैं तो बिल्कुल स्पेशल हैं। विनम्र एंव निःस्वार्थी होने में सबसे बढ़े हुए हैं, घमंड घृणा तथा इसके विरुद्ध संघर्ष करने वाले हैं तो बड़े स्पेशल हैं। एम टी ए पर मेरा ख़ुत्बः सुनने वाले तथा मेरे प्रोग्रामों को देखने वाले हैं ताकि उनको मार्ग दर्शन मिलता रहे, तो बड़े स्पेशल हैं। यदि ये बातें तथा वे समस्त बातें जो अल्लाह तआला को पसन्द हैं, ये सब करने वाले हैं और वे सारी बातें जो अल्लाह तआला को नापसन्द हैं उनसे रुकने वाले हैं तो निःसन्देह स्पेशल बल्कि बड़े स्पेशल हैं अन्यथा आप में तथा दूसरों में कोई अन्तर नहीं है। यह माँ बाप को भी याद रखना चाहिए और इस प्रकार अपने बच्चों का प्रशिक्षण करना चाहिए क्यूँकि यदि ये चीज़ें हैं तो इस समय दुनया में क्रांति लाने का माध्यम आपको अल्लाह तआला ने बनाया है।

इस प्रकार प्रशिक्षण की अवधि में माँ बाप इस बात के उत्तरदायी हैं कि इस दृष्टि से उन्हें स्पेशल बनाएँ तथा बड़े होकर ये वाक़फ़ीन-ए-नौ स्वयं इस स्पेशल होने के स्तर को प्राप्त करें। माँ बाप को भी मैं कहना चाहता हूँ कि वे जितनी चाहे अपने बच्चों की ज़बानी तर्बियत कर लें इसका प्रभाव उस समय तक नहीं होगा जब तक अपनी कथनी करनी को इसके अनुसार नहीं बनाएँगे। माँ बाप को अपनी नमाज़ों के स्तर को नमूना बनाना होगा। क़ुरआन-ए-करीम के पढ़ने पढ़ाने के लिए अपने नमूने स्थापित करने होंगे। उच्च शिष्टाचार के लिए नमूना बनना होगा, दीन का ज्ञान सीखने की ओर स्वयं भी ध्यान करना होगा। झूठ के प्रति घृणा के उच्चतम नमूने क़ायम करने होंगे। घरों में बावजूद इसके कि कुछ लोगों को ओहदेदारों से कष्ट पहुंचा हो, निज़ाम के विरुद्ध अथवा ओहदेदारों के विरुद्ध बोलने से बचना होगा। एम टी ए पर कम से कम मेरे ख़ुत्बे जो हैं वे यथावत सुनने होंगे और ये बातें केवल वाक़फ़ीन-ए-नौ के माता पिता के लिए ही आवश्यक नहीं अपितु प्रत्येक वह अहमदी जो चाहता है कि उसकी नस्लें निज़ाम-ए-जमाअत से जुड़ी रहें, उन्हें चाहिए कि अपने घरों को अहमदी घर बनाएँ अन्यथा अगली पीढ़ियाँ दुनयादारी में पड़कर न केवल अहमदियत से दूर चली जाएँगी बल्कि ख़ुदा तआला से भी दूर हो जाएँगी तथा अपनी दुनया और आख़िरत दोनों को नष्ट करने वाली होंगी। ख़ुदा करे न केवल समस्त वाक़फ़ीन-ए-नौ बच्चे ख़ुदा तआला की निकटता प्राप्त करने वाले और तक़्वा पर चलने वाले हों बल्कि उनके प्यारों के कर्म भी उनको हर प्रकार की बदनामी से बचाने वाले हों बल्कि हर अहमदी, वह वास्तविक अहमदी बन जाए जिसका बार बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने आग्रह फ़रमाया है ताकि दुनया में हम शीघ्रता के साथ अहमदियत और वास्तविक इस्लाम का झन्डा उठता हुआ देखें। अल्लाह तआला हम सबको इन उपदेशों के अनुसार कर्म करने का सामर्थ्य प्रदान करे।